बिल्कुल तुम्हारी तरह

यहाँ दूर पहाड़ों पर मैं अकेला
वहाँ घर में बेटियों बीच तुम

इस समय एक ऊँची चोटी पर खड़ा
मैं नीरव नयनों से निहार रहा हूँ छँटते बादलों को
धीरे- धीरे धूप चढ़ रही है घरों पर
मुझे याद आ रहा है तुम्हारा चेहरा

ठीक इन्ही क्षणों में
न जाने क्या कर रही होगी तुम!

शायद नहलाकर बेटियों को
सँवार रही होगी उनके बाल
निरख रही होगी उनके चेहरे
लोग कहते हैं
बड़ी की आँखे हैं मेरी तरह
छोटी की तुम्हारी तरह

इधर कई दिनों से अकेले
तुम संभाल रही होगी घर-बाहर
 मैं तो थक जाता हूँ अक्सर
ठीक से नहीं कर पाता अपने हिस्से का भी काम
और तुम हो
जो सब कुछ कर लेती हो हँसती हुई चुपचाप

लेकिन अबकी जब मैं घर आऊँ
एक बात बताना मुझको
आखिर किस ताख पर रख दिया तुमने अपना गुस्सा
तुम्हारी वह जीभ कहाँ गुम हो गई
जो बता सकती है अपने स्वाद और अपनी इच्छाएँ

मुझे याद है
जबसे हम साथ-साथ हैं
ऐसा कई बार हुआ है जब
मैं लौटा हूँ अपनी यात्राओं से तब
मेरे कुछ कहने से पहले ही

तुमने लपक कर थाम लिया है मेरा दुःख
मैं अच्छी तरह जानता हूँ
तुम पहचानती हो मेरे सुख का रंग उसकी भाषा
पर संग-साथ के इतने वर्षों बाद भी
ठीक यही बात मैं नहीं कह पाऊँगा अपने लिए

मैं जानता हूँ यह अपराध है
पर क्या करूँ
कहाँ से लाऊँ
अपने भीतर एक स्त्री की आत्मा!
वह भी एक ऐसे समय में
जब बच्चियाँ मारी जा रही हैं कोख में ही

फिर भी एक इच्छा है मन में
कि अबकी जब मैं घर आऊँ
तुम अपनी कहो
अपने जैसों की कहो
और मैं सुनूँ उसी तरह
जैसे सुनती हो तुम

वैसे सच-सच बताना
क्या तुम्हें लगता है
मैं सब कुछ सुन पाऊँगा
बिल्कुल तुम्हारी तरह?